मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

"सरसों की फसल के प्रमुख कीट एंव उनका प्रबंधन"

डॉ दया शंकर मीणा, डॉ केशव मेहरा और डॉ विजय शंकर आचार्य
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर

सरसों की खेती आमतौर पर समस्त राजस्थान में की जाती है। इस फसल से कम सिंचाई एंव कम लागत में दूसरी फसलो की तुलना में अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। सरसों की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन दोमट एंव हल्की दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त रहती है। सरसों की खेती सिंचित एंव बारानी दोनों प्रकार के क्षेत्रो में की जा सकती है।

बीजोपचार एंव बुआई के समय का महत्व :–

बुआई से पूर्व सरसों के बीजो को 2 ग्राम मैनकोजेब या 2 ग्राम कार्बेन्डेजिम या 5–6 ग्राम एप्रोन 35 एस.डी. या 3 ग्राम थायरम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजो को उपचारित करने से फसल कई रोगों व कीटो के आक्रमण से बच जाती ळें इमिडाक्लोप्रिड 3 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करने पर मोयला (एफिड) के प्रति फसल काफी हद तक सुरक्षित हो जाती है। बारानी क्षेत्रो में 15 अक्टूबर तक सरसों की बुआई कर देनी चाहिए एंव सिंचित क्षेत्रो में अधिक से अधिक अक्टूबर के आखरी तक बुआई कर देनी चाहिए। देर से बुआई करने पर उपज में भारी कमी होती है एंव चेपा और सफेद रोली का प्रकोप अधिक होता है।

उन्नत किस्मो का चयन :– वरुणा, क्रांति, आर.एच. 30,119 और 749, पूसा जय किसान, पूसा बोल्ड, रजत, अरावली एंव आर.जी.एन.–48

सरसों की फसल को नुकसान पहुचाने में तीन कीटो का मुख्य स्थान है जो सरसों की उपज एंव गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करते है। इन कीटो का प्रबंधन गुणवत्तायुक्त उत्पादन के लिए बेहद जरुरी है।

1. मोयला (एफिड,मांहू,तेला व चेपा) –:

सरसों की फसल में मोयला नवम्बर के अंतिम सप्ताह या दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में देखा जाना शुरू होता है जो फरवरी आते आते इसकी जनसंख्या सबसे अधिक देखी जा सकती है। इस कीट के शिशु एंव प्रोढ़ दोनों नुकसान पहुचाते है। इनके मुंखाग चुभाने व चूसने वाले होते है, जो पौधो की जड़ो को छोड़कर सभी भागो से रस चूसते है। सबसे ज्यादा प्रकोप पौधो के तनों एंव मुलायम भागो के साथ साथ फलियों पर भी होता है, जिस से पौधे की बढवार रुक जाती है और पौधे पीले पड़कर सूखने लगते है। ये कीट पौधो पर स्थाई रूप से समूह में चिपके रहते है और साथ ही मधुस्त्राव भी निकालते है, जिससे काले कवक का आक्रमण भी हो जाता है, फलस्वरूप पौधो पर जगह जगह काले धब्बे दिखाई देते है। इस प्रकार से ग्रसित पौधो पर फलिया कम लगती है, एंव तेल की मात्रा में भी कमी आ जाती है। साधारण दशाओ में यदि दिसम्बर से जनवरी के महीने में बादल छाए रहे या हल्की फुहार पड़े तथा नमीयुक्त हवाये चले तो इस कीट का प्रकोप बहुत अधिक बढ जाता है।

नियत्रण :–

1. सरसों की शीघ्र पकने वाली किस्मो को बोना चाहिए तथा इसके साथ ही बुआई जल्दी करनी चाहिए।
2. प्रतिरोधी किस्मे जैसे :– ए.जी. एच.4 एंव टाइप दृ 10 की बुआई करनी चाहिये।
3. 24 कि.ग्रा. क्युनोलफांस 1.5 प्रतिशत चूर्ण प्रति हैक्टेयर के हिसाब से भुरकाव करे।
4. 1200 मि.ली. थायोमिथोकजाम (25 डब्ल्यू.जी.) या 1200 मि.ली. डाईमिथोइट (30 ई.सी.) या 1000 मि.ली. मानोक्रोटोफांस को पानी की उचित मात्रा के साथ मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करे।
5. अगर मोयला का प्रकोप कम न हो तो 15 दिन बाद दुबारा कीटनाशको का छिडकाव करे।
6. यदि बुआई के एक महीने बाद 3 प्रतिशत कार्बोफूरान ग्रेनुल्स की 15 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में पौधो की जड़ो के पास मिलायी जाये तो लगभग फसल की सुरक्षा मोयले से की जा सकती है।

2 सरसों की आरा मक्खी :–

इस कीट की सुंडी (ग्रबध्लट) अवस्था ही फसल को नुकसान पहुचाती है। सुंडी के काटने एंव चबाने वाले मुंखाग होते है जो पौधो की कोमल पत्तियों को खाता है, एंव पत्तियों में छेद कर देता है। फलस्वरूप पत्तिया सूखने लगती है, तथा पौधो की बढवार रुक जाती है। इस कीट का प्रकोप फसल के शुरूआती दिनों में ज्यादा नुकसान दायक होता है।

नियंत्रण :–

1. सुबह सुबह सुंडियो को पकड़कर नष्ट किया जा सकता है।
2. फसलो की कतारों के बीच गुड़ाई कर देनी चाहिए जिससे छुपी हुई अवस्था को नष्ट किया जा सके।
3. 25 कि.ग्रा. क्युनालफांस 1.5 प्रतिशत या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण प्रति हैक्टेयर प्रातः एंव शाम को भुरकाव करे।

4 1200 मि.ली. मैलाथियान (50 ई.सी.) या 1200 मि.ली. डाईमिथोइट (30 ई.सी.) या 100 ग्राम थायोमिथोकजाम 25(डब्ल्यू.जी.) को पानी की उचित मात्रा में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करे।

5. बैस्टेनाल 45 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का 0.1 प्रतिशत घोल बनाकर छिडकाव करे द्य इससे कीट फसल को खाते नहीं है।

3. सरसों का चितकबरा कीट :–

इस कीट का प्रकोप फसल बोने के कुछ दिनों बाद ही देखने को मिल जाता है। इस कीट के शिशु और प्रोढ़ दोनों हानिकारक होते है। जो पौधे के कोमल भागो का रस चूसते है। जिससे पौधो की पत्तिया पीली पड़ जाती है, बढवार रुक जाती है। ये कीट जिस स्थान पर रस चूसते है वंहा काले कवक का आक्रमणभी होता है। इसके प्रभाव से पौधो में फूल कम लगते है तथा साथ ही फलिया कमजोर लगती है। फलियों में दाने कम लगते है और तेल की प्रतिशत मात्रा भी कम हो जाती है।

नियंत्रण :–

1. इसके शिशु और प्रोढ़ को पकड़कर नष्ट किया जा सकता है।
2. ये भूमि की दरारों में छुपे रहते है इसलिए सिंचाई के साथ 5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से क्रुड आयल इमल्सन मिला कर सिंचाई करे।
3. 25 कि.ग्रा. क्युनालफांस 1.5 प्रतिशत या 1200 मि.ली. मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करे।
4. 1200 मि.ली. मेलाथियान (50 ई.सी.) या 1200 मि.ली. डाईमिथोईट (30 ई.सी.) या 100 ग्राम थायोमिथोकजाम 25(डब्ल्यू.जी.) को पानी की उचित मात्रा में मिलाकर छिडकाव करे।

ओरोबंकी (भुमिफोड़ खरपतवार) :–

सरसों में इसका भी प्रकोप उत्पादन एंव गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसके लिए इनको बीज बनने से पहले ही उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।

रोगरोधी किस्मो की बुआई करे

जैसे :– दुर्गामणि

फसल चक्र अपनाकर भी इस खरपतवार से बचाया जा सकता है। साथ ही एक खेत में लगातार सरसों की बुआई से बचना चाहिए।

पाला :– सरसों की फसल को पाले से बचाने के लिए 0.1 प्रतिशत (1 लीटर पानी 1 मि.ली.) व्यवसायिक उपयोग वाले गंधक के तेजाब का छिडकाव करे। संभावित पाला पड़ने की स्थिति में इस उपाय को दोहराते रहना चाहिए ।